Q. नेपोलियन बोनापार्ट के उदय पर प्रकाश डालें?

Ans:— कहा गया है। 1799 से 1814 तक युरोपिय इतिहास फ्रांस का इतिहास है और इस काल का फ्रांसीसी इतिहास एक व्यक्ति की जीवनी है।" वह व्यक्ति नेपोलियन बोनापार्ट है। लगभग पन्द्रह वर्षों तक अकेले यही व्यक्ति सारे यूरोप को प्रभावित करता रहा और यह प्रभाव इतना प्रबल था कि इस युग के इतिहास को (नेपोलियन का युग) कहा जाता है। आधुनिक काल के इतिहास में इस युग का बड़ा ही महत्व है। नेपोलियन यूरोप के राजनीतिक नभमण्डल पर एक धूमकेतु की तरह प्रकट हुआ और छा ही गये और यूरोप के इतिहास में भी एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया। उसने फ्रांसीसी क्रांति के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को यूरोप में फैलाकर एक राष्ट्रीय क्रांति को अन्तरराष्ट्रीय क्रांति का रूप दे दिया। 1871 तक यूरोप के इतिहास को वह प्रभावित करता रहा। वस्तुतः का नवनिर्माण उसी कृतियों के फलस्वरूप ही सम्भव हो सका।

प्रारम्भिक जीवन — इस महान् व्यक्ति का जन्म कोर्सिका द्वीप के अजाचियो नामक नगर में 15 अगस्त 1769 को हुआ था। इसके कुछ वर्ष पूर्व रूसो ने भविष्य-वाणी की थी कि "मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि यह छोटा सा द्वीप किसी दिन यूरोप को आश्चर्य-चकित कर देगा।" रूसो की इस भविष्यवाणी को इसी नेपोलियन ने सही साबित किया। 1768 तक यह द्वीप जिनोआ के अधिकार में था। नेपोलियन के माता-पिता इटालियन थे। कोर्सिका के राष्ट्रीय संग्राम असफल होने पर वे फ्रांस की अधीनता में आ गये और उसका पिता कुलीन हो गया, पर नेपो-लियन का परिवार कहने को ही कुलीन श्रेणी का था। वास्तव में, वह एक बहुत ही गरीब परिवार था। नेपोलियन का पिता कार्लो बोनापार्ट वकीलत पेशा करता था

और उसे इतनी आमदनी नहीं होती थी कि सुगमता से इस विशाल परिवार का खर्च चला सके।

नेपोलियन की शिक्षा ब्रिन और और पेरिस के सैनिक विद्यालय में हुई थी। स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद नेपोलियन सब - लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुआ, लेकिन पेरिस में उसका मन नहीं लगता था। वह अपनी मातृभूमि कोर्सिका में ही रहा करता था। 1789 से 1793 तक नेपोलियन का अधिकांश समय कोर्सिका में ही बीता। इस कारण उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

प्रगति के पथ पर - इसी बीच फ्रांस में क्रांति प्रारम्भ हो गयी। अब नेपोलियन को अपनी उन्नति के लिए अच्छा मौका मिला। फ्रांस में महान् परिवर्तन हो रहे थे। अधिकांश कुलीन सैनिक अफसर फ्रांस छोड़ कर भाग गये थे और नेपोलियन को अपनी महत्वकांक्षाओ के लिए विशाल क्षेत्र मिलने वाला था। जन, 1793 में वह अपने परिवार सहित फ्रांस वापस लौट आया। यहाँ जब जकोब दल में सम्मिलित हो गया और उसको पूरा सैनिक पद पुनः प्राप्त हो गया।

अपनी प्रतिभा का परिचय देने का अवसर नेपोलियन को सर्वप्रथम तूलों में मिला। तूलों के निवासियों ने विद्रोह कर दिया था और अपनी सहायता के लिए अंग्रेजी सेना बुला ली थी। इस विद्रोह को नेपोलियन ने बड़ी कुशलतापूर्वक दबाकर अंग्रेजों को शहर से निकाल - बाहर किया। यहीं से नेपोलियन की उन्नति का प्रारम्भ होता है। उसे ब्रिगेडियर जनरल का पद दिया गया तथा तूलों से नीस तक के समुद्रतट का रक्षक बना दिया गया।

5 अक्टूबर, 1795 को नेपोलियन को अपनी योग्यता का परिचय देने का दूसरा अवसर मिला। उस दिन राजतंत्रवादी

तथा कुछ प्रजातंत्रवादी संविधान के विरुद्ध पेरिस की भीड़ को संगठित करके कन्वेन्शन पर आक्रमण करने की योजना बना रहे थे। कन्वेन्शन ने नेपोलियन को इस विद्रोह को दबाने का काम सौंपा और उसने बड़ी कुशलता से इस विद्रोह को दबा दिया। सात वर्षों के भीतर यह पहला अवसर था जब पेरिस की भीड़ दबायी गयी हो। इस विजय से नेपोलियन की ख्याति काफी बढ़ गयी। कन्वेन्शन ने उसे गृह-सेनापति नियुक्त कर दिया।

इटली में नेपोलियन का अभियान – इसके उपरांत फ्रांस में डायरेक्टरी का शासन प्रारम्भ हुआ। उधर फ्रांस में नेपोलियन का जी नहीं लगता था। वह सैनिक अभियान पर इटली जाना चाहता था। डाइरेक्टर लोग भी महत्वाकांक्षी नेपोलियन को पेरिस से दूर रखना चाहते थे। इसलिए उसे इटली पर आक्रमण करनेवाली सेना का सेनानायक बना दिया गया। इटली की ओर प्रयाण करने से दो दिन पूर्व नेपोलियन ने एक अनुपम सुन्दरी तथा प्रभावशाली महिला जोसेफाइन से विवाह कर लिया। जोसेफाइन एक विधवा स्त्री थी। उसका पति सेनापति बोआर्मा आतंक के राज्य में कत्ल कर दिया गया था। जोसेफाइन से विवाह कर लेने से नेपोलियन का महत्व और अधिक बढ़ गया। उसकी गणना फ्रांस के बड़े आदमियों में होने लगी।

जिस समय नेपोलियन इटली की ओर चला उस समय उसकी उम्र केवल सताईस वर्ष की थी, लेकिन इस अवसर पर उसने जिस विरता और प्रतिभा का परिचय दिया, उसको देखकर उसके समर्थक और विरोधी दोनों तले ऊँगली दबाने लगे।

इटली का युद्ध – 27 मार्च 1796 का नेपोलियन ने इटली में अपने अभियान को प्रारम्भ किया। उसके सैनिक इटली में एक महजबी जोश से घुसे। उन्हें अपने आदर्श पर पूर्ण विश्वास था। क्रांति का संदेह को सम्पूर्ण

यूरोप में फैलाया ~~किया~~ गया। इटली की सीमा में घुसते ही नेपोलियन ने युद्ध करने की घोषणा की। इटली के लोगों को सम्बोधित करते हुए उसने कहा 'फ्रांस की सेना आपकी जंजीर काटने आयी है। फ्रांस के लोग संसार के सभी देशों की ~~ज~~जनता शतियाँ अक्षुण्ण रहेंगी। हम उदारता की भावना से प्रेरित होकर युद्ध करेंगे। उन निरंकुश शासकों को छोड़कर जो आपको गुलाम बनाए हुए हैं, दूसरों से हमारा कोई झगड़ा नहीं है।"

आल्प्स पर्वतमाला को पार कर उसने अपनी सेना सहित पीडमौंट में प्रवेश किया। पीडमैंट राजा ~~ह~~हार गया और उसने नेपोलियन के साथ संधि करके (28 अप्रैल) नीस और सेवाय के प्रान्त फ्रांस के जिम्मे सुपुर्द कर दिया। इसके बाद नेपोलियन आस्ट्रियावालों पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा। 15 मई को विजय प्राप्त करते हुए वह मिलान शहर में पहुँचा। वहाँ की जनता में एक मुक्तिदाता के रूप में उसका स्वागत किया; क्योंकि नेपोलियन ने आस्ट्रिया की दासता से उसका मुक्त किया गया था। नेपोलियन ने नागरिकों की एक समिति बनाकर शहर के शासन का भार उस पर छोड़ दिया। अब वह आस्ट्रिया की सेना का पीछा करने के लिए मन्तुआ की ओर आगे बढ़ा। आस्ट्रियावालों को हराकर नेपोलियन ने लोमबार्डी पर आधिपत्य जमाया। 2 फरवरी, 1797 को मन्तुआ पर भी नेपोलियन का अधिकार हो गया। इस प्रकार वेनेशिया को छोड़कर सम्पूर्ण उत्तर इटली पर ~~अ~~नेपोलियन का आधिपत्य कायम हो गया।

ट्रान्सपैडेन गणतन्त्र – नेपोलियन को इटली के राष्ट्रवादियों का समर्थन प्राप्त थी। उसने रिगाओ, फेरिरा, बोलोना तथा मोडेना को मिलाकर एक छोटे से गणराज्य की स्थापना कर दी जिसका नाम ट्रांसपैडेन

गणराज्य पड़ा। यह गणराज्य जनता की इच्छा पर अध्यारित था। इटली के एकीकरण की दशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम था।

पोप के विरुद्ध युद्ध — इसके बाद नेपोलियन ने पोप की भूमि पर आक्रमण किया। पोप उसका मुकाबला करने में असमर्थ साबित हुआ और 19 फरवरी, 1797 को उसने नेपोलियन के साथ संधि कर ली। पोप ने आविन्यो पर सारे अधिकार त्याग दिये और बोलना तो केरीरा फ्रांस को दे दिये। यह नेपोलियन की बहुत बड़ी विजय थी।

कम्पोफॉमियो की संधि — पोप से निपटने के बाद नेपोलियन आस्ट्रिया की ओर मुड़ा। वेनोशिया पर आक्रमण के बाद करके वहाँ से उसने आस्ट्रियावालों को मार भगाया। अप्रिल, 1797 में नेपोलियन वियना से केवल सौ मिल की दूरी पर ही रह गया था। नेपोलियन की अप्रत्याशित सफलताओं को देखकर आस्ट्रियावाले आतंकित हो गये और संधि की याचना करने लगे। संधि के लिए दोनों पक्षों के बीच वार्ताएँ चलने लगीं तथा 17 अक्टूबर 1797 को फ्रांस और आस्ट्रिया के बीच एक संधि हो गयी, जिसको कम्पोफॉमियो की संधि कहते है। इस संधि हो गयी, जिसको कम्पोफॉमियो की संधि कहते है। इस संधि के अनुसार आस्ट्रियन नेदरलैंड पर फ्रांस के अधिकार को स्वीकृत कर लिया गया। आस्ट्रिया को नेपोलियन द्वारा निर्मित सिसेल्पाइन गणराज्य को मान्यता प्रदान की। इस गणराज्य को नेपोलियन ने छोटे - छोटे राज्यों को मिलाकर संगठित किया था। फिर, फ्रांस की सीमा पर राइन नदी के बाँये तट तक निश्चित की गयी। इसके फलस्वरूप अनेक जर्मन राज्य फ्रांस की सीमा के अन्तर्गत आ गये। आस्ट्रिया का इनके बदले में वेनिस का गणतन्त्र प्राप्त हुआ। आयोनियन द्वीपों पर फ्रांस का कब्जा कायम हुआ।

इस प्रकार कम्पोफॉमियो की संधि ने यूरोप के राजनीतिक मानचित्र परिवर्तन ला दिया। इनमें कोई संदेह नहीं कि ये परिवर्तन फ्रांस के लिए काफी लाभदायक सिद्ध हुए। फ्रांस की सीमा उसकी "प्राकृतिक सीमा" तक पहुँच गयी और इटली पर फ्रांस का प्राधान्य स्थापित हो गया।

नेपोलियन का राजनेतृत्व — कम्पोफॉमियों की संधि नेपोलियन के इटालवी अभियान का चरमोत्कर्ष था। नेपोलियन एक कुशल सैनिक होने के अतिरिक्त महान राजनेता भी है, इसका संकेत इसी समय मिला। अयोनियन द्वीपों पर अधिकार करके उसने अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया। इन द्वीप का बड़ा ही व्यवसायिक महत्व था। नेपोलियन मिस्त्र पर आक्रमण करने की योजना इसी समय से बना रहा था। मिस्त्र की ओर बढ़ने के लिए आयोनियन द्वीपों की स्थिति बड़ी अनुकूल थी।

इटालवी अभियान के समय नेपोलियन की उच्च आकांक्षाओं की झलक भी मिली। इटली में उसका कार्य एक स्वतन्त्र राजा की तरह हुआ। उसने डाइरेक्टरी की जरा भी परवाह न की। डाइरेक्टरों से बिना पूछे ही और कभी-कभी उनकी इच्छा के विरुद्ध वह युद्ध छेड़ता रहा, संधियाँ करता रहा और नये-नये राज्यों का निर्माण करता रहा। इटली के विजित प्रदेशों में उसने पूरी मनमानी की। जिन राजाओं को उसने परास्त किया उसने बहुत-सा धन वसूल किया और फ्रांस भेज दिया। इटली से अनेक चित्र और मूर्तियाँ उसने फ्रांस के म्युजियम को सजाने के लिए भेजा। इसको सरासर लूट के सिवा कुछ नहीं कहा जा सकता।

नेपोलियन का फ्रांस लौटना — कम्पोफॉमियों की संधि के बाद 5 दिसम्बर 1797 को नेपोलियन पेरिस लौट

आया। नेपोलियन की विजयों ने यूरोपीय राज्यों के प्रथम गुट को तोड़ दिया था। केवल ब्रिटेन ही अकेले फ्रांस के विरुद्ध मैदान में डटा हुआ था। जब नेपोलियन फ्रांस लौटा तो अभूतपूर्व स्वागत हुआ। एक ही साल के अन्दर उसने आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर ली थी। युद्ध के सारे खर्च को उसने विजितों से वसूला था और अपना लाल खर्च निकालकर दो करोड़ के लगभग रुपये फ्रांस भी भेज चुका था। इसके अतिरिक्त, पेरिस के अजायब घर के इटली से असंख्य कलात्मक कृतियाँ भी फ्रांस भेजी थीं। उसकी इन सफलताओं से प्रभावित होकर पेरिस की जनता ने अपार उमंग के साथ इन नवयुवक विजेता का स्वागत किया।

विजय की नयी योजना - नेपोलियन के लौटने पर जनता ने तो उसका खूब स्वागत किया, लेकिन डायरेक्टरी के सदस्य उससे काफी घबड़ा गये। उन्हें नेपोलियन से भय मालूम पड़ने लगा। वे उसको राजधानी से दूर रखना चाहते थे। अभी ब्रिटेन फ्रांस के विरुद्ध युद्ध लड़ रहा था। अतः उन्होंने नेपोलियन को ब्रिटेन पर हमला करने का आदेश दिया, लेकिन नेपोलियन प्रत्यक्ष रूप से सीधे ब्रिटेन पर हमला नहीं चाहता था। उस देश पर आक्रमण करने की उसकी दूसरी ही योजना थी।

नेपोलियन एक अत्यन्त ही दूरदर्शी सेनाध्यक्ष था। इंगलैंड को हराने के लिए शक्तिशाली नौ-सेना चाहिए। जबतक इस तरह की नौ-सेना नहीं हो जाती तबतक उस छोटे-से टापू को जीतना असम्भव था, किन्तु क्रान्ति के कारण फ्रांस की नौ-शक्ति बहुत दुर्बल हो गयी थी। अतएव प्रत्यक्ष रूप से अभी इंगलैंड पर हमला करना खतरे से खाली नहीं था, पर इंगलैंड को पराजित करने के लिए नेपोलियन के पास एक दूसरी योजना भी थी। उसको समझते देर नहीं लगी कि इंगलैंड केवल एक द्वीप मात्र नहीं है;

प्रत्युत वह दूर-दूर फैले हुए प्रदेशों का एक साम्राज्य है जिसमें भारत सबसे महत्वपूर्ण है। यदि भारत में अंग्रेजों को हरा दिया तो यूरोप में इंगलैंड की हार निश्चित हो जायगी।

मिस्त्र का अभियान — भारत पर आक्रमण करने की योजना नेपोलियन के दिमाग में काम करने लगी। इस सिलसिले में वह सर्वप्रथम मिस्त्र पर अपना अधिपत्य कायम करना चाहता था। यदि मिस्त्र को अपने अधीन कर लिया जाय तो इंगलैंड के पूर्वी व्यापार पर गहरा आघात पहुँचाया जा सकता है। फिर, भारत पर आक्रमण करने के लिए मिस्त्र एक बहुत ही अच्छे सैनिक अड्डे का काम भी दे सकता है। इन तर्कों के आधार पर नेपोलियन ने मिस्त्र पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया। जब डाइरेक्टरों ने इस योजना को सुना तो उन्हें काफी प्रसन्नता हुई। वे नहीं चाहते थे कि नेपोलियन-जैसा महत्वाकांक्षी और भयंकर व्यक्ति अधिक दिनों तक पेरिस में रहे। उन्होंने शीघ्र ही इस योजना का अनुमोदन कर दिया।

मई, 1798 को लगभग अड़तीस हजार अनुभवी सैनिकों को लेकर उसने तूलो से मिस्त्र के लिए प्रस्थान किया। साथ ही, असंख्य इंजीनियर, डॉक्टर, इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता, ज्योतिषी, खनिज, विशेषज्ञ, रसायन शास्त्री आदि को भी अपने साथ लेता गया। कारण, पूर्व में नेपोलियन केवल सैनिक विजय ही प्राप्त करना नहीं चाहता था, वरन् प्राच्य सभ्यता आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करने का इरादा भी रखता था।

जिस समय नेपोलियन अपने विशाल जहाजी बेड़े को लेकर भूमध्यसागर में चल रहा था उस समय

नेल्सन के नेतृत्व में इंगलैंड की नौ सेना भी चक्कर लगा रही थी। नेपोलियन नेल्सन की दृष्टि बचाकर मिस्त्र पहुँचना चाहता था, लेकिन एडमिरल को उसकी गतिविधि का पता चल गया। उसने नेपोलियन पर आक्रमण करना चाहा; पर नेपोलियन बच गया और 8 जुलाई, 1798 को मिस्त्र के प्रसिद्ध बन्दरगाह अलकजेन्ड्रिया को पहुँच गया। इसके बाद वह काहिरा की ओर बढ़ा। 21 जुलाई का पिरामिडों के पास मिस्त्र की सेना को परास्त ~~करके~~ ~~उसने~~ परास्त करके काहिरा में प्रवेश किया।

अभी काहिरा में नेपोलियन का प्रभुत्व भली-भाँति जमा भी न था कि नेल्सन उसका पीछा करते हुए अलकजेन्ड्रिया आ पहुँचा और नेपोलियन की सेना पर धावा बोल दिया। 1 अगस्त का नेपोलियन और नेल्सन के बीच घमासान मुठभेड़ हुई। यह नील नदी के युद्ध के नाम से विख्यात है। इस लड़ाई में फ्रांसीसी बेड़ को अपार क्षति उठानी पड़ी। वह पूर्णतया नष्ट हो गया। नेपोलियन के पास जलमार्ग से फ्रांस वापस पहुँचना अथवा फ्रांस से सैनिक सहायता मँगवाना बिल्कुल असम्भव हो गया। वह एक ऐसे देश में घिर गया जहाँ की जनता उसका शत्रु थी और जलवायु अत्यन्त कष्टप्रद, पर नेपोलियन कठिन परिस्थितियों में घबरानेवाला व्यक्ति नहीं था। बेकार समय में भी वह चुपचाप बैठने वाला नहीं था। वह अपनी सेना के साथ असंख्य विशेषज्ञों को भी साथ लेता आया था। उसने अपना समय अब वैज्ञानिक और पुरातत्वीय खोजों में लगाया। मिस्त्र की प्राचीन सभ्यता की जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके विशेषज्ञ जुट गये। और यह नेपोलियन के प्रयासों का ही परिणाम है कि योजना भी नेपोलियन ने ही बनायी थी। नेपोलियन के इस अभियान एच० ए० एल० फिशर ने लिखा है — "उसकी निष्फल

योजनाओं में महत्व और गौरव की कमी नहीं थी। नेपोलियन ने एक ओर जहाँ मिस्त्र में सभ्य सत्कार की स्थापना की, वहाँ दूसरी ओर यूरोप के लिए नील नदी घाटी की सभ्यता के अध्ययन का द्वार खोल दिया। रोजेट पत्थर की खोज में मिस्त्र के प्राचीन अक्षरों का ज्ञान हुआ। यह एक प्रतिभावान व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा विज्ञापन था।

सीरिया का आक्रमण - नील नदी के युद्ध में पराजय के बाद नेपोलियन यों ही नहीं बैठ रह सकता था। नेल्सन की विजय से प्रोत्साहित होकर यूरोप के राज्यों ने फ्रांस के विरुद्ध द्वितीय गुट बना लिया था और जब नेपोलियन ने उस पर आधिपत्य जमाया तो तुर्की के सुल्तान के लिए यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि वह नेपोलियन के विरुद्ध यह उद्घोषित कर दे। उसने तुरंत ही नेपोलियन के विरुद्ध एक विशाल सेना भेज दी। नेपोलियन ऐसी नाजुक स्थिति में किसी तरह फ्रांस पहुँचना चाहता था। सीरिया, तुर्की, आस्ट्रिया और जर्मनी होते हुए स्थलमार्ग से फ्रांस पहुँचना ही उस समय सम्भव था। अतएव सीरिया पर विजय प्राप्त करने के लिए वह मिस्त्र से चल पड़ा। मार्च, 1799 में एकर नामक स्थान पर सेना के साथ नेपोलियन की भीषण लड़ाई हुई। नेपोलियन यहाँ भी हार गया। भारी क्षति उठाकर नेपोलियन को पीछे हटना पड़ा। फ्रांसीसी सेना में उसी समय महामारी फैल गयी। अतएव बाध्य होकर नेपोलियन को मिस्त्र लौट आना पड़ा।

डायरेक्टरी की नीति और फ्रांस की बदनामी - डायरेक्टरी की कुशलता तथा भ्रष्टाचारी शासन के कारण देश की कठिनाइयाँ बेहद बढ़ गयी थीं। वस्तुओं के मूल्य बढ़ते जा रहे थे और बेकारी की समस्या भी गंभीर होती जा रही थी। उसकी विदेश-नीति अत्यन्त

आक्रामक और सिद्धान्तहीन थी। उसकी नीति यह थी कि युद्ध चलता रहे सेना तथा उसके योग्य सेनापति जिनसे उसे सदा भय लग रहा था, बाहर बने रहें और विजित प्रदेशों से लूट की धनराशी आती रहे जिससे शासन का काम चलता रहे। अत: उसने पड़ोसी देशों में हस्तक्षेप जारी रखा। दिसम्बर, 1797 ई० में बिना मेदिची में रोम के कुछ व्यक्तियों ने जनतन्त्र स्थापना के लिए आवाज लगायी, जिसके परिणामस्वरूप पोप के सैनिकों और रोमवासियों में झगड़ा हो गया। एवं उसमें कुछ व्यक्ति मारे गये। डाइरेक्टरी को पोप के विरुद्ध कार्यवाही करने का बहाना मिल गया। फ्रांसीसी सेनापति बर्थियर को आज्ञा दी गयी कि वह रोम पर अधिकार करे। रोम को बचाने की चेष्टा नहीं की गयी। विद्रोहियों ने पोप की सत्ता उलट दी तथा तिबेराइन गणराज्य की स्थापना की। गणराज्य का शासन चलाने के लिए सात कॉन्सल निर्वाचित किये गये। बर्थियर ने रोम में प्रवेश किया तथा फ्रांस के नाम पर गणराज्य का अभिनन्दन किया। पोप को निर्वासित किया गया। इस प्रकार बिना किसी संघर्ष के पोप के पद का पतन हुआ। फ्रांस के सैनिकों ने वैटिकन के महलों तथा नागरिकों को लूटा।

इसी तरह उत्तरी इटली में फ्रांस का विरोध बढ़ रहा था। सिसेल्पाइन गणराज्य की परिषद् ने डाइरेक्टरी के साथ पुन: सन्धि करने का प्रस्ताव अस्वीकार किया था, क्योंकि सन्धि के अनुसार गणराज्य को पचीस हजार फ्रांसीसी तथा बाइस हजार सिसेल्पाइन सैनिक तथा डाइरेक्टरी द्वारा संचालित युद्धों का खर्च देना पड़ता। बर्थियर ने परिषद् का विघटन तथा सदस्यों को सन्धि स्वीकार करने के लिए विवश किया। इस प्रकार कम्पोफोर्मियो की सन्धि द्वारा दी गयी स्वतंत्रता समाप्त कर दी गयी।

सिसेल्पाइन के गणराज्य की स्वतंत्रता नष्ट करने के पश्चात् सेनापति बार्थियर का ध्यान पीडमेन्ट की ओर गया। पीडमौन्ट तथा सार्डीनिया बहुत समय से एक ही राज्य थे। उसने पीडमौन्ट का राज्य फ्रांसीसी में मिला दिया। उसी प्रकार उसने टस्कनी पर भी अधिकार किया। फ्रांस की प्रसारवादी नीति से स्पष्ट होने लगा कि वह शीघ्र ही इटली पर अधिकार कर लेगा।

स्विट्जरलैंड के कैंटन युद्ध तथा आन्तरिक अशान्ति से बचे हुए थे, परन्तु 1797 ई० में नेपोलियन को सूचना मिली कि कैंटनों में आन्तरिक फूट फैल रही है। उसी वर्ष वह जनतंत्रवादी नेता ओकस से मिला एवं उसे विश्वास हो गया कि स्विटसरलैंड के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर दिया। 1798 ई० मे फ्रांस की सेना ने स्विट्जरलैंड के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर दिया। 1798 ई० में फ्रांस की सेना ने स्विट्जरलैंड की राजधानी पर अधिकार किया, परिसंघ को विघटित किया तथा फ्रांसीसी ढाँचे पर हेल्वेटिक गणराज्य की स्थापना की। वहाँ से फ्रांस को लगभग तेइस लाख फ्रैंक तथा बहुत-से लड़ाई के सामान मिले। गणतन्त्रीय से कैंटनों में शान्ति स्थापित न हो सकी। वहाँ विद्रोह होने एवं फ्रांस के विरुद्ध असन्तोष बढ़ता गया।

डाइरेक्टरी की प्रसारवादी नीति का विरोध होने लगा। कवियों में वर्डसवर्थ और कोलरिज तथा राजनीतिज्ञों ने निर्वासित कारणों से फ्रांस की नीति का घोर विरोध किया। डाइरेक्टरी की इन ज्यादतियों को देखकर और नेल्सन की विजय से प्रोत्साहित होकर इंगलैंड ने आस्ट्रिया और रूस के साथ मिलकर फ्रांस के विरुद्ध एक दूसरा गुट तैयार कर लिया

और तुर्की, नेपुल्स तथा पुर्तगाल उसमें शामिल हो गये थे। इटली से फ्रांस की सेनाएँ खदेड़ कर निकाल दी गयी थीं और स्वयं फ्रांस पर आक्रमण का डर था।

नेपोलियन का फ्रांस लौटना — एकर में हारने के बाद नेपोलियन जब मिस्र में बैठा था, उसी समय एक विश्वस्त सूत्र से इसको यह ज्ञात हुआ कि फ्रांस के विरुद्ध यूरोपीय शक्ति का नया गुट तैयार हो गया है और फ्रांस पर आक्रमण करने की भयंकर तैयारी हो रही है। इटली और जर्मनी पर से फ्रांस के आधिपत्य का अन्त हो गया है और डाइरेक्टरी के सदस्य ऐसी विषम परिस्थिति में हाथ-पर-हाथ धर बैठे हैं। ऐसे संकटपूर्ण समय में उसका तुरत फ्रांस पहुँचना अत्यन्त आवश्यक था। नेपोलियन अब फ्रांस लौटने की योजना बनाने लगा, लेकिन यह काम भी खतरे से खाली नहीं था। अंग्रेजी समुद्री बेड़े आस-पास के समुद्र में गश्त लगा रहे थे और उसके द्वारा पकड़े जाने की पुरी आशंका थी। फिर भी, नेपोलियन चुपके से भाग निकलने की योजना बनाने लगा। सेना का कमान क्लेबर को सौंप तथा कुछ विश्वासपात्र वीर सैनिकों को अपने साथ लेकर चुपके से वह फ्रांस के लिए रवाना हो गया। और अँग्रेजी बेड़े की निगाह बचाता हुआ 9 अक्तुबर, 1799 को फ्रांस के किनारे जा लगा। 16 अक्तुबर को वह पेरिस पहुँचा। उसके आगमन की सूचना से डाइरेक्टर डर गये। परन्तु फ्रांस में हर्ष और उल्लास की लहर दौड़ पड़ी। मानो राजनीति को सभी लोगों से मुक्ति पाने के लिए अचूक औषधि प्राप्त हो गयी हो। उस समय नेपोलियन ने अपने मित्रों से कहा — "ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक व्यक्ति मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। यदि मैं कुछ समय पहले आता तो बड़ी जल्दी होती। यदि मैं कुछ समय बाद आता तो बहुत देर हो जाती। मैं ठीक समय पर आया हूँ।"

नेपोलियन के फ्रांस लौटते ही फ्रांसीसी जनता में सर्वत्र उत्साह छा गया। लोगों में नयी आशा बँधी। चारों तरफ यही सुनाई पड़ने लगी कि फ्रांस का त्रास्क आ पहुँचा है। डाइरेक्टरी के अयोग्य, भ्रष्ट और अकुशल शासन से फ्रांसीसी तंग आ गये थे। वस्तुओं का मुल्य बहुत बढ़ गया था। व्यापार को काफी क्षति पहुँच रही थी। बेकारी बढ़ गयी थी और सार्वजनिक सुरक्षा की समस्या अत्यन्त गम्भीर हो चली थी। डाइरेक्टरी शासन फ्रांस को इस कठिन परिस्थिति से निकालने में बिल्कुल असमर्थ था। अतएव जब लोगों ने सुना कि आस्ट्रिया और इटली का विजेता तथा मिस्त्र में रहस्यपूर्ण काम करनेवाला उनका अजेय सेनापति सकुशल पेरिस आ गया है तो देश भर में सर्वत्र उत्साह की लहर दौड़ पड़ी। अब उपयुक्त समय आ गया था जब नेपोलियन अपनी महत्वाकांक्षी को सुगमता से पूर्ण कर ले।

ब्रुमेयर की राजपलटी और डाइरेक्टरी का अन्त:- नेपोलियन के आगमन का समाचार सुनकर डाइरेक्टरी में आतंक छा गया। उनके कुशासन से फ्रांस के सभी लोग बिगड़े हुए थे। ऐसे समय में उनको इस बात का भय होने लगा कि नेपोलियन-जैसा महत्वाकांक्षी व्यक्ति अवसर से लाभ उठाकर डाइरेक्टरी शासन का अन्त कर फ्रांस का अधिपति न बन जाय। वास्तव में इस समय ~~वे~~ उनको नेपोलियन की भी यही इच्छा थी। वह डाइरेक्टरी शासन का अन्त करने के लिए षड्यंत्र करने लगा। व्यवस्थापिका के अनेक सदस्य इस षड्यंत्र के समर्थक थे। दो डाइरेक्टर भी, जिनमें एक अब्बे सेयेज थी, उसके साथ शामिल हो गया। षड्यंत्र-कारियों ने यह निश्चय किया कि 10 नवम्बर, 1799 को नेपोलियन अपने विश्वासपात्र सैनिकों की सहायता से 'पाँच सौ की सभा' पर हमला करे और वहाँ से अपने

विरोधियों को निकाल - बाहर कर दे या कैद कर ले। निश्चित दिन को सभा - भवन पहुँचा, लेकिन उसकी पूर्व निश्चित योजना सफल नहीं हो सकी। अतएव उसने सेना की सहायता ली। सेना ने सभा - भवन को घेर लिया और विरोधी सदस्यों को चुन - चुन कर बाहर खदेड़ दिया। सदन के अन्दर केवल वैसे ही लोग बच गये जो नेपोलियन के समर्थक थे। इन सदस्यों ने डाइरेक्टरी के अन्त की घोषणा की और उसकी जगह तीन कौन्सिल नियुक्त किये गये। नेपोलियन प्रथम कॉन्सल बनाया गया। एवं सि सेयेज तथा ड्यूकस अन्य दो कॉन्सल हुए। इस प्रकार फ्रांस के डाइरेक्टरी के स्थान पर नयी कार्यपालिका कन्सूलेट की स्थापना हुई। कन्सलेट को फ्रांस के लिए एक नया संविधान बनाने का आदेश दिया गया। अत: नेपोलियन का रास्ता साफ हो गया।

फ्रांस ने नेपोलियन की तानाशाही को क्यों स्वीकार किया? — बहुत से राजनीतिक प्रयोगों के बाद फ्रांस में 1804 में पुन: उस वक्त आनुवंशिक तानाशाही की स्थापना हो गयी जब नेपोलियन ने अपने को "फ्रांसीसियों का सम्राट" घोषित कर लिया और जनमत - संग्रह द्वारा इसका अनुमोदन करवा लिया।